अध्ययन सामग्री

विषय- हिन्दी

सेमेस्टर- प्रथम(01) स्नातकोत्तर

प्रश्न पत्र- तृतीय(cc-03)

सूफीकाव्य

पदनाम- डॉ स्मिता जैन

एसोसिएट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

एच डी जैन कॉलेज, आरा

12:03

Scanned with CamScanner

भक्तिकाल के निर्गुण संत काव्य के अंतर्गत सूफी काव्य को विद्वानों ने कई नामों से संबोधित किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसे 'प्रेममार्गी सूफी शाखा' इस नाम से संबोधित किया है। अन्य नामों में प्रेमाख्यान काव्य, प्रेम काव्य, आदि प्रमुख है। इस काव्य परम्परा को सूफी संतो की देन माना जाता है।

सूफी शब्द की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में विभिन्न मत है। कुछ विद्वान 'सूफ' को सफ शब्द से निकला हुआ मानते हैं जिसका अर्थ है, जो अग्रिम पंक्ति में खड़े होंगे, वे सूफी होंगे। कुछ एक विद्वान मदीना की मस्जिद के समक्ष सुफ्फा-चबुतरे पर बैठने वाले फकीरों को सूफी कहते है। सूफी शब्दों को सोफिया का रुपान्तर माना गया है। कुछ विद्वानों ने सूफी शब्द का संबंध सफा से जोड़ा है जिसका अर्थ पवित्र और शद्धता है। कुछ ने तर्क संगति के आधार पर सूफी शब्द का संबंध सूफ अर्थात 'उन' कपड़े से माना गया है।

आचार्य शुक्ल ने भक्तिकालीन हिन्दी की इस प्रेमाख्यान परम्परा को फारसी-मसनवियों से प्रेरित माना है। इस काव्य धारा के प्रमुख प्रवर्तक मलिक मुहम्मद जायसी है।

३आ. २ सूफी काव्य के प्रमुख कवि

सूफी काव्य के प्रवर्तक मलिक मुहम्मद जायसी माने जाते हैं। यह निर्गुणोपासक कवियों की दूसरी शाखा है। सूफी कवियों ने प्रेम कथाओं के लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक ईश्वर भक्ति की है। भक्ति कालीन निर्गुण सूफी कवियों में जायसी, कुतुबन, मंझन, शेख नबी, कासिम शाह, नूर मुहम्मद आदि प्रमुख कवियों ने 'प्रेममार्गी काव्य' को विकसित करने में अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। यहाँ सभी प्रमुख सूफी कवियों का परिचय दिया जा रहा है।

मलिक मुहम्मद जायसी

भक्तिकालीन प्रेमाख्यान काव्य के प्रमुख कवि जायसी है। उनके जन्म के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। अंतःसाक्ष्य के आधारपर जायसी का जन्म सन् १४९५ माना गया है, रायबरेली में जायस नगर में इनका जन्म हुआ था। जायस नगर में जन्म लेने के कारण ही ये

Scanned with CamScanner

जायसी कहलाये। इनके पिता का नाम मलिक शेख ममरेज या मलिक राजे अशरफ था। माता–पिता की बचपन में ही मृत्यु हो जाने के कारण ये फकीरों और साधुसंगति में रहने लगे। कुछ विद्वानों का कहना है कि, जायसी का विवाह हुआ था, उन्हें पुत्र भी थे किन्तु वे किसी दुर्घटना में मर गये। अन्त:साक्ष्य के आधार पर जायसी देखने में कुरुप थे। वे एक आँख तथा कान से रहित थे। एक बार शेर शाह ने उनकी कुरुपता का उपहास उडाया तब उन्होंने उत्तर दिया, ''मोहि का हँसेसि कि कोहरहित' शेरशाह लज्जित हुए और इनका अत्याधिक सन्मान किया। इन्हीं के काल में इनके कई शिष्य बन गए थे शिष्य पद्मावत के पद्य गा गाकर भिक्षाटन करते थे। एक दिन ऐसा ही एक चेला अमेठी में नागमती का बारहमासा गाता फिर रहा था–

'कँवल जो विगसा मानसिर, बिनुजल गएउ सुखाई।
सूखि बेलि पुनि पलुहै, जो पिउ सींचे आइ।।'

राजा यह दोहा सुन कर जायसी को बड़े आदरभाव से अमेठी ले आए। और वे अंत समय तक वहीं रहें। जायसी की मृत्यु वहीं पर अमेठी के जंगल में बहेलिए के तीर से हुई। अमेठी नरेश ने जायसी की यहीं पर एक समाधि बनवा दी, जो अब भी मौजूद है।

जायसी की रचनाओं के सन्दर्भ में विद्वानों द्वारा लगभग २१ रचनाओं का उल्लेख मिलता है। पद्मावत, अखरावट और आखिरी कलाम ये तीन रचानाएँ प्रकाशित हो चूकी है। अन्य रचनाओं में चम्पावत, इरावत, सखरावत, मरकावत, चित्रावत, मोराई–नामा, मुकहरानामा, पौस्तीनामा, सुर्वानामा, नैनावत, कहरनामा, मेखरावटनामा, धनावत, सोरठ, परमार्थ जपनी और स्फुट छंद आदि का उल्लेख किया जाता है। उनकी 'पद्मावत' में रत्नसेन और पद्मावती की लौकिक प्रेम कहानी द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है। 'अखरावट' में वर्णमाला के एक एक अधार को लेकर सिद्धांत संबंधी तत्वों से भरी चौपाईयाँ कही गई हैं और साथ ही ईश्वर, सृष्टि, जीव, ईश्वर प्रेम आदि विषयों पर विचार प्रकट किए हैं। 'आखिरी कलाम' में कयामत के वर्णन के साथ जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार है।

जायसी ने अपनी रचनाओं में ठेठ अवधी के पूर्वीपन को अपनाया है। जायसी की भाषा प्रसाद और माधुर्यगुण से परिपूर्ण है। जायसी ने अपनी रचनाओं में दोहा, चौपाई छंदों का प्रयोग कर अवधी भाषा में सफल प्रयोग किया है। अलंकारों में उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, अन्योक्ति, व्यतिरेक, विभावना, संदेह अनुप्रास, निदर्शना आदि का सफल प्रयोग किया है। नि:संदेह जायसी का साहित्य में विशेष स्थान है। बाबू गुलाबराय के शब्दोंमें – ''जायसी एक महान कवि है। उनमें कवि के सहज गुण विद्यमान है। उसने सामायिक समस्या के लिए प्रेम की पीर को देन दी। उसपीर को अपने शक्तिशाली महाकाव्य के द्वारा उपस्थित किया। वह अमर कवि है।''

अन्य सूफि कवि

कुतुबन का अविर्भाव समय सन् १४९३ ई. था। वे शेख बुरहान के शिष्य थे। उन्होंने 'मृगावती' प्रेमाख्यान की रचना की। इसमें चंद्रनगर का राजकुमार और कंचन पुर की 'मृगावती' की प्रेम कथा वर्णित है। कवि 'मंझन' ने सन् १५४५ ई. में 'मधुमालती' लिखा है। इसमें कनेसर

Scanned with CamScanner

नगर के राजकुमार और महारसनगर की राजकुमारी 'मधुमालती' की प्रेम कथा है।

कवि 'उसमान' जहाँगीर कालीन कवि थे। हाजी बाबा इनके गुरू थे। उन्होंने 'चित्रावली' नामक प्रेमाख्यान लिखा है। इसमें नेपाल राजकुमार सुजान और रुपनगर की राजकुमारी चित्रावती की प्रेमकथा वर्णित है। कवि शेख नबी ने सन् १६१९ ई. में 'ज्ञानद्वीप' की रचना की थी। इसमें राजकुमार ज्ञानद्वीप और राजकुमारी देवयानी की प्रेम कथा चित्रित है। कवि 'मुल्लावजही' ने सन् १६०९ ई. में 'कुत्ब मुश्तरी' प्रेमाख्यान काव्य है। इसमें गोलकुण्डा के राजपुत्र मुहम्मद कुली कुत्बशाह और बंगाल की सुंदरी मुश्तरी की प्रेम-कथा वर्णित है। कवि 'नुस्त्रती' ने सन् १६५८ ई. को 'गुलशने इश्क' प्रेमाख्यान काव्य लिखा। इसमें कनकगिरि के राजकुमार मनहर और धर्मराज की पुत्री मदमालती की प्रेमकथा वर्णित है। कवि 'मुकीमी' ने 'चन्दरबदन व महयार' प्रेमाख्यान लिखा। इसमें सुन्दरपटन के हिन्दू राजा की पुत्री 'चन्दरबदन' और मुस्लिम व्यापारी पुत्र महरयार की दु:खान्त प्रेम कहानी है। कवि 'मीराहाशमी' ने सन् १६८८ ई. में 'युसूफ-जुलेखा' प्रेमाख्यान लिखा।

इन प्रेमाख्यानों के अलावा सूफि सन्तों ने दोहों, गज़लों, स्फुट पदों, की रचनाएँ प्राप्त होती।

Scanned with CamScanner